IIP: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-IV*December-2014
E: ISSN NO.: 2349-980X

मुगल साम्राज्य के पतन में दक्षिण नीति की ऐतिहासिक समीक्षा

हरीश कुमार
इतिहास विभाग,
डॉ0 भीमराव अम्बेड्कर जन्म शताब्दी महाविद्यालय, धनसारी,
अलीगढ़।

सारांश

मुगलों में अकबर पहला मुगल सम्राट था जिसने उत्तरी भारत के अधिकांश भाग को जीतने के बाद दक्षिण भारत को विजित करने में उत्सुकता दिखायी। उसकी दक्षिण नीति के दो उद्देश्य थे। पहला, वह अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था।

मुख्य शब्द : साम्राज्य, राजनीतिक, मुगलों

प्रस्तावना :

डा0 आर0 पी0 त्रिपाठी के अनुसार, अकबर की दक्षिण नीति का उद्देश्य केवल निजी विजय की अभिलाषा या लालसा नही थी अपित उसकी नीति एक महान सम्राट के उच्च राजनीतिक आदर्श की अभिव्यक्ति थी।[1] उसने 1591 ई0 में दक्षिण के खानदेश, बीजापुर, अमहमदनगर और गोलकुण्डा के शासकों के पास अपनी अधीनता स्वीकारने का संदेश भेजा। जिसे खानदेश के शासक अलीखॉ ने सहर्ष स्वीकार किया परंतु अन्य तीनों राज्यों ने यह प्रस्ताव विनम्रतापूर्वक ठुकरा दिया। परंतु वर्षों के संघर्ष के बाद बरार, दौलताबाद और अहमदनगर के किलो को मुगलों ने अकबर के समय में ही लगभग जीत लिये थें।[2]

जहॉगीर ने अपने पिता द्वारा प्रारम्भ की दक्षिण नीति को जारी रखा लेकिन अहमदनगर के योग्य वजीर मलिक अम्बर ने अहमदनगर में समस्या प्रस्तुत की। परंतु 1616 ई0 में जब राजकुमार खुर्रम दक्षिण पहुॅचा तो उसकी अपार सेना को देखकर मलिक अम्बर ने उससे संधि कर ली। परंतु मध्यकालीन एतिहासकार ईश्वरी प्रसाद के अनुसार इन बहुमूल्य उपहारों तथा पुरस्कारों के पीछे यह कटु छिपा था कि अहमदनगर को विजय नही किया गया और मलिक अम्बर का साहस पहले की भॉति अटूट था।[3] यह वह उपहार थें जो जहांगीर ने मलिक अम्बर को दिए। ''दक्कन में राजनीति उलझन–भरे दायरे में घूमती रही। खुर्रम और बाद में महावत खॉ के विद्रोह के कारण जहॉगीर अहमदनगर तथा दक्कन के अन्य प्रदेशों को विजय करने के लिए अभियान नही भेज पाया। 1626 ई0 में मलिक अम्बर की मृत्यु हो गई लेकिन अगले वर्ष ही जहॉगीर का भी देहांत हो गया। इस प्रकार जहॉगीर की दक्षिण नीति अंत में असफल रही। शाहजहॉ के राजसिंहासन पर बैठने से मुगलों की दक्षिण नीति में एक नए युग का प्रारम्भ हुआ।[5] उसकी दक्षिण नीति का उद्देश्य साम्राज्य विस्तार, दक्कन के शिया राज्यों को कुचलने में राजनीतिक उद्देश्य के अलावा कट्टर धार्मिक विचारों से प्रेरित था। शाहजहॉ के नेतृत्व में अहमदनगर के अधिकांशत भागों को विजित किया गया। 1636 ई0 में गोलकुण्डा ने मुगलों से संधि कर उनकी आधीनता स्वीकार कर ली। वीजापुर के शासक आदिलशाह ने पहले युद्ध किया पर बाद में संधि कर ली। शाहजहॉ के शासनकाल में मुगलों ने दक्षिण में काफी कुछ हासिल कर लिया गया था।[6] औरंगजेब ने अपने शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों में दक्षिण भारत में अधिक ध्यान नहीं दिया और उत्तर में भी शासन व्यवस्थ सभालते रहे। 1681 ई0 में मेवाड़ की संधि के बाद सम्राट अपनी मृत्यु पर्यन्त दक्षिण विजय के लिए युद्ध करता रहा। उसकी दक्षिण नीति के कई मुख्य उद्देश्य थे। पहला वह अपने पूर्वजों की साम्राज्य विस्तार नीति को जारी रखना चाहता था। दूसरा औरंगजेब एक कट्टर मुसलमान (सुन्नी) था और वह बीजापुर तथा गोलकुण्डा के शिया राज्यों की स्वतन्त्रता को समाप्त करना चाहता था चौथा वह दक्षिण की अपार धन सम्पदा का उपयोग मुगल साम्राज्य के हित में करना चाहता था। पॉचवा वह अपने पुत्र अकबर को उस मार्ग पर जाने से रोकना चाहता था जिस मार्ग पर चलने से उसे मुगल सत्ता प्राप्त हुई थी इसीलिए 1665 ई0 में हारने के बाद आगामी 15 वर्षों में मुगलों ने आदिलशाही राज्यों पर कई आक्रमण किए लेकिन

सफलता नहीं मिल सकी।1686 ई0 में 17 माह की घेराबंदी के पश्चात्ही मुगलों ने बीजापुर को विजय कर लिया।[8] गोलकुण्डा के शिया सुल्तान अतुल हसन ने शासन–प्रबन्ध का काम–काज मदना व अकना नाम के दो भाइयों को सौंप रखा था। उन दोनों का ब्राह्मण होना सम्राट औरंगजेब को न भाया। सम्राट को गोलाकुण्डा को अपने अधिपत्य में लेने का बहान मिल गया इसीलिये इसे पूर्ण रूप से जीतने का निर्णय किया। इसीलिये सबसे पहले सम्राट औरंगजेब ने गोलकुण्डा को जीतने के लिए जुलाई 1685 ई0 में राजकुमार मुअज्जम को गोलकुण्डा को विजय करने के लिए भेजा।[9] राजकुमार मुअज्जम ने विशाल सेना के साथ गोलकुण्डा के हैदराबाद सहित कई राज्यों को उजाड़कर रख दिया परंतु अबुल हसन के प्रार्थना करने पर उसने कुछ शर्तों पर समझौता कर लिया परंतु औरंगजेब ने इस समझौते को अस्वीकृत कर दिया एवं 7 फरवरी 1687 ई0 को मुगलों ने गोलकुण्डा के दुर्ग को पुनः घेर लिया 8 माह के बाद भी वह अपने मकसद में कामयाब नहीं हुए। अकाल एवं महामारी के कारण उनकी परेशानियॉ और बढ़ गई। तब औरंगजेब ने छलपूर्वक एक गोलकुण्डा के पठान सरदार अब्दुल्ला की सहायता से 2 अक्टूबर 1687 ई0 को शत्रुओं पर आक्रमण किया। एवं गोलकुण्डा को विजय करने में सफल हुआ। विजय के बाद उसने अतुल हसन को बंदी बना लिया और दौलताबाद के दुर्ग में भेज दिया। इस प्रकार गोलकुण्डा की अपार धन सम्पदा मुगल सम्राट औरंगजेब को प्राप्त हुई।[10] अब सम्राट औरंगजेब ने 1663 ई0 से 1680 ई0 के बीच मराठा सरदार शिवाजी के विरूद्ध कई अभियान भेजे परंतु शिवाजी के सहासिक व शक्ति से परिपूर्ण कार्यों को न रोक सका। 1680 ई0 में जब शिवाजी की मृत्यु के बाद जब सम्भाजी मराठा सरदार बने तभी मराठा शक्ति मजबूती से मुगलों से युद्ध करती रही एवं अपने मित्र राज्यों बीजापुर व गोलकुण्डा की सैनिक सहायता भी करनी पड़ रही थीं। दूसरी ओर मुगल सेना दक्षिणी राज्यों के लिए आय के स्त्रोतों को नष्ट कर रही थीं। इसका असर मराठा राज्य पर भी हो रहा था। इसके बाद भी मुगलों ने मराठा राज्य पर पुनः भयंकर आक्रमण प्रारम्भ कर दिऐ। 1681 ई0 से 1684 ई0 के बीच हुए आक्रमणों में तो मुगलों को असफलता ही हाथ लगी। पर बाद में हुए आक्रमणों की अधिकता के कारण सम्भाजी को संगमेश्वर में उन्हें किसी युद्ध में नहीं बल्कि धोखे से गिरफ्तार किया गया था।[11] उन्हें वहॉ से बंदी बनाकर उनके मित्र कविकलश के साथ बहादुरगढ़ में औरंगजेब के शिविर में मुकर्रव खॉ के द्वारा भेजा गया।[12] बन्दी सम्भाजी को देखकर सम्राट औरंगजेब ने अपने ईश्वर का शुक्रिया अदा किया क्यांकि यह उपलब्धि सम्राट के लिऐ धार्मिक दृष्टि से दक्षिण में सबसे बढ़ी उपलब्धि थी।[13] 21 मार्च 1689 ई0 को उनके टुकड़े–टुकड़े कर दिया गया। सम्भाजी के इन टुकडों की ही भांति मुगल सम्राज्य टुकड़े–टुकड़े हो गया यह सम्भाजी का वास्तविक सम्मान था।[14] 21 अक्टूबर 1689 ई0 को मुगलों ने मराठों की राजधानी रायगढ़ को अधिकार में लेकर सारे मराठा परिवार को बंदी बना लिया। परंतु सम्भाजी का छोटा भाई राजाराम जिन्जी भाग गया। राजाराम ने जिन्जी में मराठों की एक सेना बनाई एवं सम्राट औरंगजेब के शिविरों पर आक्रमण करके उसे परेशान कर दिया था1 क्योंकि इस समय तक दक्षिण में सम्राट औरंगजेब को हराना दक्षिण का राष्ट्रीय मुद्दा बन गया था।691 ई0 में जुल्फिकार खॉ के नेतृत्व में मुगलों ने जिन्जी के दुर्ग को विजय करने का असफल प्रयास किया परंतु 1698 ई0 में ही मुगल इस दुर्ग को विजय कर पाऐ। 1700 में राजाराम की मृत्यु उपरान्त उसकी पत्नी ताराबाई ने बड़ी वीरता से मुगलों का सामना किया।[15] मुगलों ने सतारा, पाली, खेलना, सिंहगढ़, रायगढ़,तोरना, आदि दुर्गों पर अधिकार कर लिया। पर मुगल मराठों द्वारा समय–समय पर आक्रमण किए जाने से परेशान होने लगे। विभिन्न प्रदेशों में मराठा सरदार तथा सैनिक मुगलों पर अचानक टूट पड़ते तथा उन्हें परेशान करते ऐसी अवस्था में सम्राट औरंगजेब की कठिनाइयॉ बहुत बढ़ गई क्योंकि उसे किसी निश्चित मुखिया अथवा केन्द्रीय सरकार की सेना में युद्ध नही करना था।[16] अपितु राष्ट्रीय विरोध का सामना करना पड़ रहा था। डा0 जे0एन0चौधरी के अनुसार '' इस प्रकार सम्राट के मराठों को कुचलने के दीर्घकाल से चले आ रहे लगातार प्रयत्न निष्फल होने लगे मराठा राष्ट्रवाद का एक विजयी शक्ति के रूप में उत्थान हुआ।[17] जिसमे मुगल सम्राजय जलना प्रारम्भ हो गया। दक्षिण के लगातार युद्धों से तंग आकर सम्राट औरंगजेब ने मराठों से युद्ध समाप्त करके अहमदनगर के लिए प्रस्थान किया। वहॉ बीमार रहने कारण 3 मार्च 1707 ई0 को सम्राट की मृत्यु हो गई। उसे खुल्दाबाद औरंगाबाद में दफनाया गया। ऐतिहासकारों ने सम्राट औरंगजेब की दक्षिण नीति की कड़ी। आलोचना की है। उसकी नीति पूर्ण रूप से असफल रही। सम्राट ने अपने शासनकाल के पिछले पच्चीस वर्ष दक्षिण के युद्धों में लगा दिए। परंतु इन युद्धों से न तो साम्राज्य को फायदा हुआ और न ही सम्राट का। इसके विपरीत, साम्राज्य में तमाम परेशानियॉ उत्पन्न हो गई। जदुनाथ सरकार के अनुसार ऐसा प्रतीत होता था कि औरंगजेब ने सब कुछ प्राप्त कर लिया था परंतु वास्तव में वह सब कुछ खो बैठा था। इससे उसके अंत का प्रांरभ हुआ। उसके जीवन का सबसे दुख्यान्त एवं निराशाजनक काल आरंभ हुआ।[18] दक्षिण के युद्धों की निरन्तरता सम्राट एवं साम्राज्य दोनों के लिए अहितकर सिद्ध हुई। अंततः दक्षिण नीति ही सम्राट की मृत्यु का कारण बनी। डा0बी0ए0स्मिथ के अनुसार '' दक्षिण, जहॉ से वह कदापि न लौटा, उसके शरीर तथा मान दोनों के लिए कब्र सिद्ध हुआ।[19] बीजापुर और गोलकुण्डा को औरंगजेब के द्वारा मुगल साम्राज्य में विलय करने से साम्राज्य तो विशाल हो गया परंतु अब उस पर नियंत्रण करना दुष्कर हो गया। शिया राज्यों का मुगल साम्राज्य में विलय एक अन्य प्रकार की राजनीतिक भूल भी थी क्योंकि ये राज्य मुगलों एवं मराठों के बीच एक उपयोगी रूकावट का कार्य कर रहे थें। इनके समाप्त होने से मुगलों एवं मराठों में सीधी टक्कर होने लगी। इन शिया राज्यों के अस्तित्व विहीन होने से इन राज्यों के अधिकांश सैनिक मराठों में जा मिले जिससे मुगलों के दुश्मनों में वृद्धि हुई।[20] यह मुगलों के लिये एक नई समस्या बन गई क्योंकि मुगलों के दुश्मन मुगलों के सामने भाई–भाई बन रहें थें। दक्षिण में पच्चीस वर्षों के युद्धों के परिणामस्वरूप भारी जनहानि हुई। समकालीन विदेशी यात्री मनूची जिसने ऑखों देखा वर्णन किया है, कहता है कि प्रति वर्ष एक लाख सैनिक तथा तीन लाख पशु मौत का शिकार हुएः 1702 ई0 से 1704 ई0 के

बीच प्लेग फैलने से 20 लाख से अधिक पशु एवं मनुष्यों की मृत्यु हुई।[21]

सम्राट औरंगजेब ने दक्षिण के युद्धों में अपने पूर्वजों के उन्नत साही कोष के रिक्त होने की परवाह भी नही की जिससे साम्राज्य को भारी आर्थिक हानि हुई। पच्चीस वर्षों से भी अधिक समय तक मुगल सरकार को विशाल सेना एवं कर्मचारियों पर खर्चा करना पड़ा। इसके अलावा अन्य सामानों एवं खाद्य सामग्री पर भी व्यय हुआ, जिससे युद्ध के अंतिम वर्षों में शाही कोष में धन का इतना अभाव हो गया कि सैनिकों के 3 वर्षों के वेतन तक न दिए जा सके। सरकार ने उन्हे वेतन के बदले जागीरें अनुदान करने के लिए कहा पर इन बचनों को पूरा न किया जा सका। इससे सैनिक असंतुष्ट हो गए और उन्होंने साम्राज्य विरोधी कार्य करने आरम्भ कर दिए और मुगल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हो गया। दक्षिण के युद्धों का कृषि तथा व्यापार पर भी बुरा प्रभाव पड़ा। 7,00,000 की विशाल सेना के अभियानों तथा लूट–पाट के परिणामस्वरूप दक्षिण के बहुत से प्रदेश वीरान हो गए और वहॉ खेतों में हरी–भरी घास का नामोनिशान तक न रहा। मराठों का शोषण होने के कारण कृषकों को भूख एवं अकाल का सामना करना पड़ा। लगातार युद्धों के कारण व्यापार की भी अवनति हुईं युद्ध की अवस्था में व्यापारियों द्वारा व्यापारिक सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर लेकर जाना संभव न था। व्यापारी दक्षिण में जाने से भयभीत रहते थे, इससे घरेलू उद्योग की भी हानि हुई। दक्षिणी युद्धों के कारण सम्राट और मुगल अधिकारियों को राजधानी से दूर रहना पड़ा। 25 वर्ष के लंबे युद्धों के लिए साम्राज्य की आय का अधिकॉश भाग भी खर्च होता रहा। इस सबके चलते ही उत्तरी भारत की प्रशासनिक व्यवस्था बिगड़ने लगी। स्थानीय कर्मचारी अत्याचारी हो गए और वह निर्दोष लोगों को बलपूर्वक लूटने लगे।[22] केन्द्रीय सरकार की दुर्बलता के कारण प्रान्तीय सूबेदार व्यावहारिक रूप में स्वतन्त्र हो गए। इसी स्थिति का लाभ उठाकर मथुरा के जाटों, राजस्थान के राजपूतों, बुंदेलखण्ड के बुंदेलों, पंजाब के सिक्खों मालवा तथा बंगाल के पठानों ने विद्रोह कर दिए, जिन का दमन न किया जा सका।[23]

दक्षिणी राज्य क्षेत्रीय राज्य के स्थान पर मुगल साम्राज्य के अन्तर्गत प्रान्त बन गए। परिणामतः उनकी राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक तथा प्रशासनिक व्यवस्थाओं में व्यापक परिवर्तन आया। क्योंकि दक्षिणी राज्यों के सुल्तान ही अधिकार वैधता तथा शक्ति के स्त्रोत थे, इसके अतिरिक्त सुल्तान ही इन राज्यों की संस्कृति का संरक्षक था परंतु सुल्तान की जगह नियुक्त मुगल सूबेदार से कमी को पूरा नही कर पाए। क्योंकि वे अपनी स्वार्थी नीतियों को नहीं छोड़ पाए जिसके फलस्वरूप वे स्थानीय जनता से भावनात्मक रूप से नहीं जुड़ पाए। जिसकी वजह से जनता ने उन्हें सहयोग नहीं दिया।[24] दक्षिणी राज्यों के साम्राज्य में विलय किए जाने का तात्कालिक परिणाम यह हुआ कि वहॉ के स्थानीय भाषी, उच्च वर्ग का आमूल परिवर्तन हो गया। क्योंकि इससे पहले ब्राह्मण, अफगान और दक्कन मुसलमान राज्य के उच्च वर्ग में थे परंतु इसके बाद मुगल मनसबदार उच्च वर्ग में आ गए जिससे व्यापक सामाजिक गतिरोध उत्पन्न हो गया। इससे पहले से ही मुश्किल प्रशासन और मुश्किल हो गया। मुगल सम्राट तथा प्रमुख मुगल सरदारों के पच्चीस वर्षों तक दक्षिणी युद्धों में व्यस्त रहने के कारण कला एवं साहित्य के विकास की ओर ध्यान न दिया जा सका। औरंगजेब के समय में भवन निर्माण कला, चित्रकला, साहित्य, आदि का विकास, जिसके लिए औरंगजेब के सम्राट इतिहास में प्रसिद्ध हैं– रूक गया और दक्षिणी युद्धों के चलते सम्राट औरंगजेब ने अपने कर्त्तव्यों को पूर्णतः परिपालन नहीं कर पाया और मुगल साम्राज्य को पवन होने से न रोक पाया।[25] बीजापुर तथा गोलकुण्डा पर अधिकार करने के बाद मुगल सैनिक लगभग बीस वर्षों तक मराठों के विरूद्ध युद्ध करते रहे लेकिन विजय उनसे आगे ही आगे भागती और उन्हें यह युद्ध व्यर्थ प्रतीत होने लगे। मुगल सैनिक अधिकारी एवं मनसवदार इन युद्धों से इतने तंग आ गये थें कि एक ने तो सम्राट से दिल्ली लौट जाने के लिए एक लाख रूपये की रिश्वत की पेशकश की। सैनिक संगठन दुर्बल पड़ गया और सेना में अनुशासन न रहा। कई वर्षों तक युद्ध करने के बावजूद मुगल सेना मराठों को हराने में असफल रही। इससे सेना की दुर्बलता दिखी और शाही सम्मान को गहरा आघात पहुॅचा।

अतः यह कहना गलत न होगा कि सम्राट औरंगजेब की दक्षिण नीति मुगल साम्राज्य के पतन के लिए पूर्ण रूप से उत्तरदायी थीं। दक्षिण में चलने वाले युद्धों के कारण ही उसका सम्पर्क उत्तर के लोगों से टूट गया। इससे उसकी हालत न घर की रही और न घाट कीं सर जदुनार्थ सरकार के अनुसार, जिस प्रकार स्पेन का अभियान नेपोलियन प्रथम के लिए एक घातक फोड़ा सिद्ध हुआ, उसी प्रकार दक्षिण अभियान सम्राट औरंगजेब के लिए घातक फोड़ा सिद्ध हुआ।[26] वास्तव में सम्राट औरंगजेब की दक्षिण नीति केवल उसके लिए ही नहीं बल्कि मुगल साम्राज्य के लिए भी एक घातक फोड़ा सिद्ध हुई। इसके परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा, देश में अशांति तथा अव्यवस्था फैल गई और विभिन्न प्रदेशों में विद्रोह खड़े हो गऐ। इस प्रकार साम्राज्य का विघटन आरम्भ हो गया और मुगल साम्राज्य व मुगल सम्राट दोनों का पतन एक हठ धर्मी धार्मिक कट्टरता से पूरिपूर्ण मुगल सम्राट औरंगजेब के वह 25 वर्ष जो उसने दक्षिण में विताऐ वह उसके जीवन के साथ–साथ सम्पूर्ण मुगल साम्राज्य के लिए विनाशक सिद्ध हुए।[27] यह विनाश शीघ्र ही दक्षिण से उत्तर भारत में पहॅच गया और मुगल सम्राज्य एक छोटे से राज्य के रूप में स्थापित रह गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आर0पी0त्रिपाठी : राइज एण्ड फॉल ऑव द मुगल इम्पायर, इलाहाबाद 1956 पृ0–318
2. Ishwari Prasad: A short History of Muslim Rule in India pp.-459.
3. अकबर नामा : फारसी से अंग्रेजी में अनुवाद बेबरिज 3 (कलकत्ता1939) पृ0–616–17
4. बेनी प्रसाद : हिन्दी ऑब जहॉगीर (ऑ0यू0प्रे01922) पृ0–258
5. R.P.Tripathi : Rise and Fall of the Musghal Empire, P- 382
6. फ्रांसिस वर्नियर : ट्रेवेल्स इन दि मुगल इम्पायर 1656–68 अनुवादक ए. कांस्टेविल लंदन 1916.
7. Ishwari Prasad: Op, Cit, P- 494.

8. गंगा प्रसाद गुप्त : वर्नियर की भारत यात्रा (अनुवाद) प्रकाशक नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया बंसन्त कुँन्ज नई दिल्ली वर्ष 2011 पृ0–6
9. J.F. Richards, Mughal Administration in Golconda, P.37
10. अब्दुल अली तबरेजी, गोलकुण्डा लेटर्स (बि.म्यू.2.डी. 6600) को 28 अ–ब, 20 अन्य गुलदस्ता, पाडुर (सालारगंज, संग्रहालय, नं0–2731) 5–व–7 ठा0 लाइफ ऑफ मीर जुमला– पृ0–16–17
11. जी.एस.सरदेसाईः मराठों का सम्पूर्ण इतिहास भाग 2, पृ0–88
12. श्रीमती कमल गोखलेः छत्रपति सम्भाजी पृ0–80
13. ग्राण्ट टफः मराठों का सम्पूर्ण इतिहास 196
14. श्रंकनदंजी ''तांत स्टडीज इन औरंगजेब्स इन (कलकत्ता1933) पृ0–181–184
15. वही पृ0–8–17
16. ग्रॉट डफ : मराठों का सम्पूर्ण इतिहास पृ0–550–556
17. J.N. Chaudhari : The Mughal Empire, Edited by R.C. Majumdar, P-298
18. Jadunath Sarkar : (A.C.Arora, P-185)
19. Dr. V.A. Smith. : (A.C.Arora, P-185)
20. जे0एफ0 रिचर्डस : मुगल एडमिनिस्ट्रेशन इन गोलकुण्डा, आक्सफोर्ड– 1975, पृ0–215.
21. मंनुची का यात्रा विवरण : (देखिए विस्तार के लिए).
22. जदुनाथ सरकार : हाउस ऑफ शिवाजी (कलकत्ता–1940) पृ0–10–40
23. जगदीश नारायणः सरकार द लाइफ आव मीर जुमला कलकत्ता 1951 पृ0–15–31.
24. आदावे आलमगीरीः 44 व 54 व 55 वः हिन्दी ऑफ औरंगजेब पृ0–11
25. पी0एम0जोशी : दि0 आदिल शाहीज एण्ड दी बरी दीज'' हिस्ट्री ऑफ मैडीवल डेकन (1295–1724) 1.344.
26. Jadunath Sarkar: (A.C.Arora, P-187)
27. ईश्वरी प्रसादः हिस्ट्री ऑफ मैडीवल इंडिया इलाहाबाद (1952) पृ0–23.